PRINCIPAL
Shibli National College
Azamgarh (U.P.)

☎ : 220840

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री दिनेश कुमार त्रिपाठी,** शोध छात्र, हिन्दी विभाग में पी-एच०डी० आर्डिनेस की धारा ५, २ (७) के अनुसार पूर्ण समय तक शोध कार्य करके **"पद्मावत की संवेदना और काव्य भाषा : एक नई दृष्टि"** शीर्षक शोध प्रबन्ध पूर्ण कर लिया है। शोध छात्र के रूप में की गयी खोज के निष्कर्ष इनके व्यक्तिगत श्रम और अनुशीलन पर आधृत हैं।

24/12/08

प्राचार्य
शिब्ली नेशनल महाविद्यालय
आजमगढ़

हिन्दी - विभागाध्यक्ष
शिब्ली नेशनल महाविद्यालय
आजमगढ़

डॉ० आलमगीर अली अहमद
रीडर

हिन्दी विभाग
शिब्ली नेशनल महाविद्यालय
आजमगढ़

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **"पद्मावत की संवेदना और काव्य भाषा : एक नई दृष्टि"** शीर्षक शोध–प्रबन्ध, **दिनेश कुमार त्रिपाठी** के अपने अनुशीलन विश्लेषण और अन्वेषण का परिणाम है। इन्होंने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, द्वारा शोधार्थियों के लिए निर्धारित अवधि का अनुपालन करते हुए पूर्ण समय देकर, मेरे निर्देशन में अनुसंधान कार्य पूर्ण कर लिया है। मुझे जहाँ तक विदित है इनका शोध मौलिक है।

दिनेश कुमार त्रिपाठी शील और व्यवहार की दृष्टि से वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की पी–एच०डी० उपाधि की योग्यता रखते हैं।

डॉ० आलमगीर अली अहमद
डी०फिल०
शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग
शिब्ली नेशनल महाविद्यालय,
आजमगढ़

स्वर्गीय पितामह
पं० रामसमुझ तिवारी

व

उनकी धर्मपरायण पत्नी
लखपति देवी जी

को

सादर समर्पित

पद्मावत की संवेदना और काव्य भाषा : एक नई दृष्टि

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

भूमिका I - IV

प्रथम अध्याय : जायसी का रचनात्मक व्यक्तित्व 1 – 56
(अ) पद्मावत का रचनाकाल
(ब) जायसी की रचनाएँ और पद्मावत की कथावस्तु

द्वितीय अध्याय : रचना दृष्टि और सर्जना के आयाम 57 – 74
(अ) वस्तु जगत
(ब) यथार्थस्थिति
(स) सामाजिक करुणा

तृतीय अध्याय : प्रेम साधना की व्यापक भूमिका 75 – 114
(अ) प्रेम की लौकिक भूमि
(ब) प्रेम की आध्यात्मिक चेतना

चतुर्थ अध्याय : मूल्यों का मानवीय सन्दर्भ 115–132

पंचम अध्याय : जायसी की सामान्य भाषा और संवेदना 133–157

षष्ठ अध्याय : काव्य भाषा के विविध आयाम 158–206

सप्तम अध्याय : उपसंहार 207–214

सन्दर्भ ग्रंथ 215–218

भूमिका

जायसी के काव्य में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का मणि कांचन योग है। उनके काव्य में लोक जीवन एवं साधना का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार उनके कंचन वाणी से स्फुरित काव्य में संवेदना एवं काव्य भाषा का समन्वय देखने को मिलता है। जायसी पर किये गये शोध कार्य मुख्यतया एकान्तिक रहे हैं। कभी उनके संवेदनात्मक भाग को लेकर अध्ययन किया जाता है, तो कभी उनके सांस्कृतिक, सामाजिक आयाम को लेकर अनुसंधान किया जाता है, कभी केवल भाषिक पहलू को लेकर शोध कार्य किया जाता है। जायसी के काव्य का आधार प्रेम है। पद्मावत में राजा रत्नसेन एवं पद्मावती की प्रणय कथा है। पद्मावती के रूप वर्णन को सुनकर राजा रत्नसेन आकर्षित होंते हैं।

कवि लौकिक भावभूमि पर काव्य का आधार खड़ा करता है, उसके पारस बुद्धि से लौकिक कथा अलौकिक बन जाती है। प्रेम के आकाश में सौन्दर्य की इन्द्रधनुषी छटा छा जाती है फिर क्या कल्पना की विद्युत चमक उठती है। उसकी चमक में भावों की जलराशि स्वर्णिम बन जाती है। स्वर्ग आकर धरती पर छा जाता है। लौकिक प्रेम अलौकिक बन जाता है। जायसी का पूरा काव्य मानव समन्वय की विराट् चेष्टा है। इस काव्य में सौन्दर्य प्रेम में लय हो जाता है। प्रेम मानवीय मूल्य बन जाता है। भाषा संवेदना में परिवर्तित हो जाती है। भाषा और संवेदना के केन्द्र में मनुष्य है, जब भाषा और संवेदना का सम्यक अध्ययन करने लगते है, तब मानवता दीप्तिमान हो उठती है।

प्रस्तुत शोध कार्य 'पद्मावत की संवेदना एवं काव्यभाषा! एक नई दृष्टि, को लेकर किया गया है। इस शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : 'जायसी का रचनात्मक व्यक्तित्व' के अन्तर्गत पद्मावत

के रचनाकाल को जायसी के जीवनकाल एवं युगीन साक्ष्य में अन्वेषित किया गया है। जायसी एक महान रचनाकार थे। उनके रचनाओं के परिचय के साथ पद्मावत की कथा वस्तु का मूल्यांकन किया गया है।

द्वितीय अध्याय : 'रचना दृष्टि और सर्जना के आयाम' में जायसी के महाकाव्यत्त्व पर विचार किया गया है। जायसी सन्त थे। जायसी कवि थे। जायसी भारत के कवि थे। अतः जायसी के कवि रूप को नकारा नहीं जा सकता साथ ही उनके सन्त रूप की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। जो उनकी वर्णन प्रणाली है, वह एक सधे हुए कवि की है यथा वस्तु चित्रण, नागमती का बिरह वर्णन किन्तु उन्होंने जीवन के यथार्थ को जो आध्यात्मिकता से जोड़ा है, वह उनके सन्त व्यक्तित्त्व को उजागर करती है। उनकी रचना दृष्टि भौतिक–आध्यात्मिक है। यह संसार ही वर्णन का विषय है किन्तु इसकी उदात्तता अध्यात्म में पर्यवसित होती है।

तृतीय अध्याय : 'प्रेम साधना की व्यापक भूमिका' में जायसी की साधना के पारस रूप का अनुसंधान किया गया है। राजा रत्नसेन पद्मावती के रूप सौन्दर्य पर आकर्षित होता है। कहानी का प्रारंभ सौन्दर्य जगत के पट भूमि में लेता है, जहाँ प्रेम का अंकुर फूटता है, पद्मावती का सौन्दर्य अलौकिक है। इस अलौकिक सौन्दर्य का निर्माण जायसी की पारस दृष्टि से होता है, जायसी का रहस्यवाद पारस दृष्टि का दर्पण है, पद्मावती का अलौकिक सौन्दर्य प्रेम के उदात्तता का प्रतिफल है।

चतुर्थ अध्याय : 'मूल्यों का मानवीय सन्दर्भ' में जायसी के काव्य में लौकिक जीवन को परखने का यत्न किया गया है। साहित्य के केन्द्र में मनुष्य है। कवि के प्रबन्ध काव्य में मानव के जीवन अन्दर ही आध्यात्मिक उदात्तता को देखा गया है। मनुष्य शान्त और अनन्त का मिश्रण है। मानव जीवन की सहज वृत्तियाँ पाशव वृत्तियाँ नहीं है, वे तो प्रकृति की अभिव्यक्ति हैं, उनका परिष्कार साधना से होता है। अतः जायसी के काव्य में प्रेम को मूल्य मानकर प्रस्तुत किया गया है। प्रेम मानव प्रकृति का परिष्कार करता है।

पंचम अध्याय : 'जायसी की सामान्य भाषा और संवेदना' में लोक संस्कृति के अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला गया है। कवि भी सामाजिक प्राणी होता है। अतः वह सामाजिक मूल्यों की अनदेखी नहीं कर सकता। लोक में होने वाली, भोजन बनाने की विधि, विभिन्न अवसरों पर किये जाने वाले कार्यक्रम आदि का विवेचन जायसी के काव्य में हुआ है। इस प्रकार की प्रक्रियाओं की अभिव्यक्ति जिस प्रकार की शब्दावली में हुई है, वह सामान्य भाषा के नाम से अभिहित की गई है, इससे लोक जीवन का महत्त्व भी प्रतिपादित होता है।

षष्ठ अध्याय : 'काव्य भाषा के विविध–आयाम' काव्य–भाषा में प्रयुक्त शब्दावली पर विचार किया गया है। काव्य भाषा में सामान्य एवं विशिष्ट दोनों प्रकार की शब्दावली का प्रयोग होता है। सामान्य शब्दावली व्यवहार को व्यक्त करती है तथा विशिष्ट शब्दावली संवेदना में तीव्रता लाती है, जिससे बिंब निर्माण होता है। जायसी के काव्य में दोनों प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ है। इन शब्दावलियों के स्रोतों पर भी विचार किया गया है।

सप्तम अध्याय में 'उपसंहार' प्रस्तुत किया गया है।

जायसी पर प्रभूत अध्ययन हुआ है। पद्मावत हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति है। इनमें कुछ अध्यन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं यथा आचार्य शुक्ल की पद्मावत की भूमिका, डॉ0 वासुदेव शरण की संजीवनी व्याख्या, डॉ0 माता प्रसाद का पाठ संपादन, डॉ0 शिव सहायक पाठक की कृति 'मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य'।

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त कुछ और भी कृतिया हैं, जिनकी अपनी विशेष उपादेयता है – मलिक मुहम्मद जायसी (प्रथम भाग), डॉ0 कमल कुलश्रेष्ठ, पद्मावत का काव्य सौन्दर्य – डॉ0 शिव सहायक पाठक, जायसी की काव्य साधना – डॉ0 दान बहादुर पाठक, पद्मावत का ऐतिहासिक आधार – इन्द्र चन्द्र नारंग, कविवर जायसी और उनका पद्मावत – डॉ0 सुधीन्द्र, जायसी – विजय देव

नारायण शाही, हिन्दी सूफी काव्य में हिन्दू संस्कृति का चित्रण और निरूपण – डॉ0 कन्हैया सिंह।

मैंने अपने शोध प्रबन्ध में अधिकांश का उपयोग किया है। मेरे इस प्रबन्ध में पद्मावत के काव्य अध्ययन के साथ 'मानव मूल्य' का भी अध्ययन है मुख्य रूप से चतुर्थ अध्याय में। काव्यभाषा और संवेदना के सन्तुलित विवेचन का प्रयास किया गया है, इसके साथ ही अध्यात्म को परिष्कार प्रणाली के रूप में देखा गया है।

मेरे इस शोधकार्य में, सबकी तरह मुझ पर भी, औरों का इतना ऋण है कि मैं जिन्दगी भर न तो उसे चुका सकता हूँ और न ही बता सकता हूँ लेकिन कुछ चुनिन्दा व्यक्तियों के प्रति मैं आभारी हूँ, अपने गुरू व शोध निर्देशक डा0 आलमगीर अली अहमद जी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध ग्रन्थ और इसमें निहित विचारों को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, शिब्ली नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 इफ्तखार अहमद जी का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे एक शानदार महाविद्यालय, उसकी लाइब्रेरी उपलब्ध करायी और अपना आर्शीवाद प्रदान किया, हिन्दी विभाग के गुरूजनों व विभागाध्यक्ष डा0 निजामुद्दीन अंसारी जी का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे सदैव नूतन विचारों से लैस किया, अपने भाई समान मित्रों डा0 चन्द्रप्रकाश तिवारी, विनय पाण्डेय, ब्रजेन्द्र पाण्डेय, प्रमोद पाण्डेय व भूपेन्द्र सिंह जी का अत्यन्त आभारी हूँ। इनके सहयोग बगैर यह शोध ग्रन्थ मैं कदापि पूर्व नहीं कर पाता।

माता–पिता व गुरू के ऋण से कभी ऋणमुक्त नहीं हुआ जा सकता। अपनी धर्मपरायण माता श्रीमती दमयन्ती त्रिपाठी जी का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे बचपन से गल्तियां करने व उनसे सीखने की स्वतंत्रता दी। पिता श्री नन्दगोपाल त्रिपाठी जी को प्रणाम व आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मुझ लसदार कच्ची मिट्टी को घड़े की शक्ल दी, जो आज भी कहते हैं – "निश्चितता एक भ्रम है और विराम मनुष्य का भाग्य नहीं।"

अपनी सहधर्मिणी श्रीमती किरन त्रिपाठी को भी आभार व धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने गृहस्थ जीवन की दैनिक कठिनाइयों को अपने ऊपर ओढ़ मुझे निरन्तर पढ़ने व कुछ नया करने का वातावरण उपलब्ध कराया। अपने प्यारे बच्चों अनामिका, अपराजिता व कामताआशीष को आर्शीवाद व आभार ज्ञापित करता हूँ क्योंकि जिस अवधि में मैंने यह शोध कार्य पूर्ण किया वो उन्हें एक पिता से प्राप्त होने वाला समय था, पर इन सबने अपना समय देकर मुझे इस शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने दिया।

इस शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने में सहायक उन सभी दृश्य–अदृश्य शक्तियों को आभार ज्ञापित करते हुए, मैं अन्त में पुनः अपने गुरू व शोध निर्देशक डा0 आलमगीर अली अहमद जी के प्रति कतज्ञ व ऋणी हूँ जिनके बगैर यह कार्य मुझसे पूर्ण नहीं हो पाता, जिन्होंने जायसी व उनके कृतित्व पर एक नूतन अंतर दृष्टि प्रदान की।

शोधकर्ता

दिनेश कुमार त्रिपाठी

(दिनेश कुमार त्रिपाठी)

प्रवक्ता (गणित)

बाबा राघवदास इण्टर कालेज,

भाटपार रानी, जिला देवरिया